अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

रूसो की शक्षा संबंधी चेतना; संपूर्ण वकास की परिकल्पना

लेखक -
1- डॉ. मायानंद उपाध्याय (शोध निर्देशक, एसो. प्रो., वभागाध्यक्ष शक्षा वभाग , राजा श्री कृष्ण दत्त पी जी कॉलेज जौनपुर सम्बद्ध वी बी एस पूर्वांचल वश्व वद्यालय जौनपुर)
2- अंकुर सहाय श्रीवास्तव (शोधार्थी, पूर्वांचल वश्व वद्यालय जौनपुर)

रूसो का पूरा नाम जीन जैक्स रूसो है ।रूसो एक प्र सद्ध प्रकृतिवादी शक्षा दार्शनिक थे इनका जन्म 28 जून सन 1712 ईस्वी को स्विट्जरलैंड के जिनेवा नामक नगर में एक सम्मानित परिवार में हुआ था उनके पता एक फ्रांसीसी घड़ी साज थे । जन्म के तुरंत बाद मां की मृत्यु होने के कारण इनकी देखभाल इनकी चाची ने कया । 12 वर्ष की अवस्था में घर से भागकर छोटी-मोटी नौकरी यह करने लगे। रूसो को सर्वप्रथम प्र स द्ध तब प्राप्त हुई जब उसने डजान निबंध प्रतियो गता में सफलता हा सल की । इनका दूसरा निबंध संपूर्ण यूरोप में प्र सद्ध हो गया और इसप्रकार रूसो जो क कल तक का भटकता इंसान था अनायास ही प्र सद्ध हो कर एक प्रकृतिवादी दार्शनिक के रूप में स्था पत हो गया।

रूसो की शक्षा का प्रभाव यूरोपीय शक्षा की 19वीं सदी में दिखाई देता है। 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रूसो ने जिन वचारों का प्रसार कया उनका प्रभाव 19वीं सदी की शक्षा की तीन प्रवृत्तियों में दिखाई पड़ता है मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और सामाजिक ।

रूसो ने बाल मनो वकास या बाल मनो वज्ञान के संबंध में जितने भी वचार व्यक्त कए उनके पीछे उसका प्रकृतिवाद था । इस प्रकार रूसो की शक्षा का एक प्रभाव मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के रूप में दिखाई देता है इस प्रवृत्ति के पोषकों तथा प्रचारकों में पेस्टोलॉजी, हरबार्ट तथा फ्रोबेल के नाम उल्लेखनीय हैं ।

रूसो की शक्षा का दूसरा प्रभाव वैज्ञानिक प्रवृत्ति के वकास में सहायक हुआ उन्होंने शक्षा में प्राकृतिक वातावरण को बालक की जिज्ञासा और खोज की प्रवृत्ति को वक सत करने के लए स्थान दिया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

रूसो की शक्षा सामाजिक प्रवृत्ति के वकास में भी सहायक हुई रूसो ने व्यक्ति को सामाजिक प्राणी कहा , इतना ही नहीं रूसो ने बु द्ध के बदले हृदय को स्थान देकर जन सामान्य के हित का समर्थन कया । शक्षा में उद्योग धंधों को सम्मि लत कर उसने सामाजिक जीवन को अपनाया। इस लए रूसो की शक्षा व्यक्तिवादी होते हुए भी सामाजिक प्रवृत्ति के वकास में सहायक सद्ध हुई।

रूसो ने व्यक्तित्व के सहज वकास के लए शक्षा की भू मका पर जोर देते हुए उसके स्वरूप और प्रणा लयों में क्रांतिकारी परिवर्तन के सुझाव दिए। वह रूसो ही थे जिन्होंने शक्षा के बारे में बाल केंद्रित नजरिए से सोचने की नींव डाली।

रूसो के सद्धांत ने राज्य एवं धर्म संबंधी वचारों को मूलभूत रूप में ही बदल दिया । अपनी 'ए मल' नामक कृति में रूसो ने शक्षा के प्रति एक बिल्कुल भन्न और मौ लक वचार का प्रतिपादन करते हुए बालक के स्वाभा वक आवेगो और वृत्तियों का दमन न करने का आग्रह कया । रूसो ने अपने जीवन काल में समाज के संपर्क में आने के पश्चात जो भी अपार अनुभव कए उन्हीं अनुभव को अपने जीवन दर्शन का आधार बनाकर शक्षा के क्षेत्र में प्रयोग करने का सफल प्रयास कया। रूसो ने अपने शक्षा संबंधी वचारों को 'ए मल', द न्यू हैलाॅयज, द सोशल कान्ट्रैक्ट, तथा कंसीडेरेशन ऑन द गवर्नमेंट ऑफ पोलैंड में दिए हैं ।

'ए मल ' में उसने ए मल को एक काल्पनिक पुरुष के रूप में लया है जिसको शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था तक आयु के अनुसार व भन्न व धयों से शक्षा देने की सफारिश वह करता है एवं स्त्री शक्षा के लए उसने ए मल के पांचवें खंड में 'सौफी' को लया है जिसे उसने ए मल की भावी पत्नी के रूप में परिणत कर उसको ए मल के लए एक आदर्श पत्नी बनाने के लए रूढ़िवादी एवं स व धक शक्षा देना चाहता है प्रकृतिवादी होने के कारण वह शक्षा का वातावरण भी प्राकृतिक मानता है । उसकी कृति 'ए मल' ने शक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति को जन्म दिया। 'ए मल ' के बारे में रस्क ने ठीक ही कहा है- " जिस दृढ़ता से रूसो ने 'एमील' में अपने वरो धयों की रूपरेखा प्रस्तुत की है , वह आकर्षक है और उसने शै क्षक साहित्य में इसका स्थायी स्थान बना दिया है।"

रूसो ने बाल केंद्रित शक्षा पर वशेष ध्यान दिया उसने अध्यापक को केवल मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार कया है उसके अनुसार - अध्यापक वह है जो बालक के लए उपयुक्त

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

वातावरण तैयार करता है वह बालक को प्रारंभ से नैतिक शक्षा नहीं अ पतु प्रकृति में रहकर प्राकृतिक शक्षा देना चाहता है ।

रूसो अपने सामाजिक समझौता सद्धांत (सोशल कांट्रैक्ट) नामक पुस्तक की शुरुआत इस कथन से करता है क " मनुष्य स्वतंत्र जन्मा है मगर हर तरफ से यह जंजीरों में बंधा रहा " उसके इस कथन की व्याख्या के लए उसके प्राकृतिक अवस्था एवं सामाजिक समझौता संबंधी सद्धांत का ववेचन आवश्यक है । हॉब्स और लॉक की तरह रूसो ने भी सामाजिक समझौते के पूर्व एक प्राकृतिक अवस्था की व्याख्या की है जो क हॉब्स द्वारा चत्रित अवस्था की तरह न तो अंधकारमय एवं कष्टमय है और ना ही लॉक द्वारा व र्णत अवस्था की तरह आदर्श है ।

प्राकृतिक अवस्था को रूसो ने प्रारं भक काल कहा है प्रारं भक काल अर्थात उनका जीवन पूर्णता प्राकृतिक था अर्थात उसकी आवश्यकता और आकांक्षाएं कम थीं । ववेक और बु द्ध का वकास नहीं हुआ था । प्राकृतिक अवस्था के दूसरे काल को जब जनसंख्या में वृ द्ध तथा लोगों के मन में निजी संपत्ति का भाव उत्पन्न होने लगा , रूसो ने पतन की अवस्था बताया है ।

रूसो दो तरह की शक्षा व्यवस्था की बात करता है - पब्लिक या सार्वजनिक जो बहुतों के लए समान है तथा दूसरा प्राइवेट या घरेलू पब्लिक शक्षा का संचालन सरकार करती है क्यों क यह लोक प्रय सरकार की मूल आवश्यकता है दि न्यू हेलौज में रूसो प्राइवेट या निजी शक्षा अथवा घरेलू शक्षा का वर्णन करता है इस घरेलू शक्षा में मां मुख्य अध्या पका है रूसो का वद्यार्थी कोई वशेष बालक नहीं बल्कि सामान्य बालक है । रूसो पहला शक्षा शास्त्री है जो सार्वजनिक शक्षा पर जोर देता है ।

रूसो के अनुसार शक्षा का उद्देश्य मानव को प्रकृति के अनुरूप जीवन जीने के योग्य बनाना है। शक्षा द्वारा मानव संसर्ग के परिणाम स्वरूप जो कृत्रिमता उसमें आती है उससे उसकी रक्षा करता है । रूसो सामाजिक संस्थाओं और उनमें वद्यमान रूढ़ियों के कटु आलोचक हैं। रूसो की शक्षा का व्यावहारिक प्रभाव ना तो फ्रांस में पड़ा और ना ही इंग्लैंड में फ्रांस की सरकार और धर्मा धकारी पुरुषों के रूसो के शक्षा संबंधी वचारों के समर्थक नहीं थे इंग्लैंड के लोगों का दृष्टिकोण सदा व्यवहारिक रहा अतः उन लोगों को रूसो की शक्षा व्यवहारिकता के अभाव के कारण पसंद नहीं आई ले कन जर्मनी ने में रूसो की शक्षा का स्वागत कया गया

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

क्यों क वहां के शक्षा शास्त्री रूसो की मौ लकता समझते थे मुख्य रूप से रूसो द्वारा प्रदत्त शक्षा को व्यवहारिक रूप देने का प्रयास जर्मनी में कया गया।

संपूर्ण शक्षा जगत में महान पाश्चात्य दार्शनिक रूसो को एक महान युग का प्रवर्तक माना जाता है। व्यापारिक दर्शन के क्षेत्र में उसे आधुनिक प्रजातंत्रवाद का यदि जनक कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। राजनीतिक दर्शन , साहित्य के कलात्मक आंदोलन , बाल मनो वज्ञान तथा शक्षा के क्षेत्र में सार्वभौ मक रूप से रूसो को एक महान व्यक्ति स्वीकार कया गया है। शक्षा के सैद्धांतिक और व्यावहारिक जगत में बालक के सम्पूर्ण वकास के अध्ययन के लए रूसो को जानना और समझना बहुत आवश्यक है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1- वश्व के श्रेष्ठ शक्षाशास्त्री , वनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा
2- शक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, वनोद पुस्तक मंदिर,आगरा
3- शक्षा एवं शक्षण सद्धांत, आगरा ,साहित्य प्रकाशन हॉस्पिटल रोड
4- शक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार डॉ.माथुर वनोद पुस्तक मंदिर आगरा
5- बंदे ,"रूसो का जीवन परिचय ,रूसो का शक्षा दर्शन" 2019 अ धकारिक वेबसाइट www.scotbuzz.org
6- दर्शनशास्त्र- एक समग्र अध्ययन , डॉ. अवधेश यादव चौखंभा प्रकाशन
7- वश्व के महान शक्षा शास्त्री , पाठक आर. पी. दिल्ली वश्व वद्यालय प्रकाशन
8-हर्षद पटेल, " जीन जैक्स रूसो की जीवनी " 2018 ,अ धकारिक वेबसाइट www.scotbuzz.org